ISSN 2454 - 5163
प्रकाशन तिथि : 26 दिसम्बर 2015, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 6, कुल पृष्ठ 32

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक : डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

श्री दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र मढियाजी–जबलपुर (म.प्र.)

वीतराग-विज्ञान (390)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

द्रव्यदृष्टिवंत की परिणति

जिसे द्रव्यदृष्टि यथार्थ प्रगट हुई है उसे दृष्टि के जोर में मात्र ज्ञायक भासता है, शरीरादि कुछ भासित नहीं होते। भेदज्ञान की परिणति ऐसी दृढ हो जाती है कि स्वप्न में भी आत्मा शरीर से भिन्न भासित होता है। दिन में तो भिन्न भासता है; किन्तु रात्रि को नींद में भी निराला भासित होता है। सम्यग्दृष्टि को भूमिकानुसार बाह्य वर्तन होता है; परन्तु बाह्य वर्तन में भी किन्हीं भी संयोगों में उसकी ज्ञान-वैराग्यशक्ति कोई भिन्न प्रकार की रहती है। बाह्य से चाहे जैसे प्रसंग में संयोग में युक्त दिखाई दे तथापि ज्ञायक तो ज्ञायकरूप ही भासता है। विभाव से भिन्न ज्ञायकरूप नि:शंक भासता है। सारा ब्रह्मांड बदल जाये फिर भी वह स्वरूपानुभव में नि:शंक वर्तता है। ज्ञायक पर आरूढ होकर ऊर्ध्वरूप से विराजता है, दूसरे सब नीचे रह जाते हैं। चाहे जैसे शुभभाव आयें, तीर्थंकर गोत्र का शुभभाव आये तथापि वह भी नीचे ही रहता है। द्रव्यदृष्टिवंत को ऐसी अद्भुत शक्ति वर्तती है।300

– द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 70

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2542) 390 अंक : 6

जीव ! तैं मूढपना कित...

जीव ! तैं मूढपना कित पायो।
सब जग स्वारथ को चाहत हैं, स्वारथ तोहि न भायो।।टेक।।

अशुचि अचेत दुष्ट तन माहीं, कहा जान विरमायो।
परम अतीन्द्रिय निजसुख हरिकै, विषय रोग लपटायो।।
जीव ! तैं मूढपना कित... ।।1।।

चेतन नाम भयो जड़ काहे, अपनो नाम गमायो।
तीन लोक को राज छांड़िकै, भीख मांग न लजायो।।
जीव ! तैं मूढपना कित... ।।2।।

मूढपना मिथ्या जब छूटै, तब तू सन्त कहायो।
'द्यानत' सुख अनन्त शिव-विलसो, यों सद्गुरु बतलायो।।
जीव ! तैं मूढपना कित... ।।3।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

सम्पादकीय

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

५. उत्तमसत्य – स्थूल झूठ नहीं बोलना, **सत्याणुव्रत** है। सूक्ष्म भी झूठ नहीं बोलना, सदा सत्य ही बोलना, **सत्यमहाव्रत** है। सत्य भी कठोर, अप्रिय, असीमित न बोलकर, हित-मित एवं प्रियवचन बोलना, **भाषासमिति** है और बोलना ही नहीं **वचनगुप्ति** है।

उत्तम सत्यधर्म इन सबसे पृथक् होता है; क्योंकि उसे इसी शास्त्र में अणुव्रत, महाव्रत, भाषासमिति और वचनगुप्ति से अलग बताया है।

यद्यपि सामान्यजन सत्याणुव्रत, सत्यमहाव्रत; भाषासमिति और वचनगुप्ति को सत्यधर्म मान लेते हैं; तथापि सत्यधर्म इनसे अलग है।

ज्ञानानन्दस्वभावी, त्रैकालिक, ध्रुव, आत्मतत्त्व ही परम सत्य है। उसके आश्रय से उत्पन्न हुआ ज्ञान, श्रद्धान एवं तीन कषाय चौकड़ी के अभावरूप वीतराग परिणति ही उत्तमसत्यधर्म है।

६. उत्तमसंयम – संयमन को संयम कहते हैं। संयमन अर्थात् उपयोग को परपदार्थ से समेट कर आत्मसन्मुख करना, अपने में सीमित करना, अपने में लगाना अर्थात् उपयोग की स्वसन्मुखता, स्वात्मलीनता ही **निश्चयसंयम** है और पाँच व्रतों का धारण करना, पाँच समितियों का पालन करना, क्रोधादि कषायों का निग्रह करना, मन-वचन-कायरूप तीन दण्डों का त्याग करना और पाँच इन्द्रियों के विषयों को जीतना **व्यवहारसंयम** है।[१]

संयम के साथ लगा 'उत्तम' शब्द सम्यग्दर्शन की सत्ता का सूचक है।

संयम दो प्रकार का होता है –

१. धवला पुस्तक १, खण्ड १, भाग १, सूत्र ४, पृष्ठ १४४

१. प्राणी संयम और २. इन्द्रिय संयम।

छह काय के जीवों के घात एवं घात के भावों के त्याग को प्राणी संयम और पंचेन्द्रियों तथा मन के विषयों के त्याग को इन्द्रियसंयम कहते हैं।

७. उत्तमतप – समस्त रागादि परभावों की इच्छा के त्याग द्वारा **स्वस्वरूप में प्रतपन करना – विजयन करना, तप** है। तात्पर्य यह है कि समस्त रागादि भावों के त्यागपूर्वक आत्मस्वरूप में – अपने में लीन होना अर्थात् आत्मलीनता द्वारा विकारों पर विजय प्राप्त करना, **तप** है।[१]

तप के साथ लगा 'उत्तम' शब्द सम्यग्दर्शन की सत्ता का सूचक है। **सम्यग्दर्शन के बिना किया गया समस्त तप निरर्थक है।**

कहा भी है –

''सम्मत्तविरहियाणं सुट्ठु वि उग्गं तवं चरंताणं।
ण लहंति बोहिलाहं अवि वाससहस्सकोडीहिं।।५।।[२]

यदि कोई जीव सम्यक्त्व के बिना करोड़ों वर्षों तक उग्र तप भी करे तो भी वह बोधिलाभ प्राप्त नहीं कर सकता।''

बारह तपों की चर्चा आगे आचार्यदेव स्वयं सूत्रों द्वारा विस्तार से करनेवाले हैं। अत: उनके संबंध में यहाँ कुछ विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं है।

८. उत्तमत्याग – निज शुद्धात्मा के ग्रहणपूर्वक बाह्य और अभ्यन्तर परिग्रह से निवृत्ति, **त्याग** है।[३]

यह त्याग धर्म भी दो प्रकार का है। **आत्मा में उत्पन्न होनेवाले मोह-राग-द्वेष भावों का त्याग करना, निश्चय त्याग धर्म है** और चार प्रकार का दान, **व्यवहार से त्याग धर्म** है।

त्याग और दान का अन्तर स्पष्ट करते हुए धर्म के दशलक्षण में लिखा है –

''दान में परोपकार का भाव मुख्य रहता है और स्व-उपकार का

१. धवला पुस्तक १२, खण्ड ४, भाग २, सूत्र १७७, पृष्ठ ८१
२. आचार्य कुन्दकुन्द : अष्टपाहुड़, दर्शनपाहुड़, गाथा ५
३. आचार्य जयसेन : प्रवचनसार, तात्पर्यवृत्ति टीका, गाथा नं. २३९

गौण; किन्तु त्याग में स्वोपकार ही सब-कुछ है।

दूसरों के उपकार के लिए मोह-राग-द्वेष नहीं त्यागे जाते हैं। यह बात अलग है कि अपने त्याग से प्रेरणा पाकर या अन्य किसी प्रकार से पर का भी उपकार हो जावे।

त्याग खोटी चीज का किया जाता है और दान अच्छी चीज का किया जाता है। यही कहा जाता है कि क्रोध छोड़ो, मान छोड़ो, लोभ छोड़ो। **यह कोई नहीं कहता कि ज्ञान छोड़ो।**

बहुत से लोग तो त्याग और दान को पर्यायवाची ही समझने लगे हैं; किन्तु उनका यह मानना एकदम गलत है। ये दोनों शब्द पर्यायवाची तो हैं ही नहीं, अपितु कुछ अंशों में इनका भाव परस्पर एक-दूसरे के विरुद्ध पाया जाता है।

दान चार प्रकार का कहा गया है – १. आहारदान, २. औषधिदान, ३. ज्ञानदान और ४. अभयदान।

जब जरा उक्त चारों शब्दों में 'दान' के स्थान पर 'त्याग' शब्द का प्रयोग करके देखें तो सारी स्थिति स्वयं स्पष्ट हो जाती है।

क्या आहारदान और आहारत्याग एक ही चीज है ? इसीप्रकार क्या औषधिदान और औषधित्याग को एक कहा जा सकता है ?

आहारदान दीजिए और स्वयं भी खूब खाइये, कोई रोक-टोक नहीं; पर आहार का त्याग किया तो फिर खाना-पीना नहीं चलेगा।

दान एक पराधीन क्रिया है, जबकि त्याग पूर्णत: स्वाधीन। जो क्रिया दूसरों के बिना सम्पन्न न हो सके, वह धर्म नहीं हो सकती। धर्म पर के संयोग का नाम नहीं, अपितु वियोग का है।

कम से कम त्यागधर्म में तो पर के संयोग की अपेक्षा संभव नहीं है; त्याग शब्द ही वियोगवाची है। यद्यपि इसमें शुद्धपरिणति सम्मिलित है, परन्तु पर का संयोग बिल्कुल नहीं।

कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं, जिनका त्याग ही होता है, दान नहीं।

कुछ ऐसी हैं जिनका दान ही होता है, त्याग नहीं।

कुछ ऐसी भी हैं जिनका दान भी होता है और त्याग भी।

जैसे – राग-द्वेष, माँ-बाप, स्त्री-पुत्रादि को छोड़ा जा सकता है, उनका दान नहीं दिया जा सकता।

ज्ञान और अभय का दान दिया जा सकता है, पर वे त्यागे नहीं जाते।

तथा औषधि, आहार, रुपया-पैसा आदि का त्याग भी हो सकता है और दान भी दिया जा सकता है।

दान कमाई पर प्रतिबंध नहीं लगाता, आप चाहे जितना कमाओ; पर त्याग में भले ही हम कुछ न दें, कुछ न छोड़ें; पर वह कमाई को सीमित करता है, उस पर प्रतिबंध लगाता है।

दान में यह देखा जाता है कि कितना दिया, यह नहीं देखा जाता कि उसने अपने पास कितना रखा है; जबकि त्याग में यह नहीं देखा जाता कि कितना दिया है या छोड़ा है, बल्कि यह देखा जाता है कि उसने अपने पास कितना रखा या रखने का निश्चय किया है, बाकी सबका त्याग ही है।''

त्याग एक ऐसा धर्म है, जिसे प्राप्त कर यह आत्मा अकिंचन अर्थात् आकिंचन्यधर्म का धारी बन जाता है, पूर्ण ब्रह्म में लीन होने लगता है, हो जाता है और सारभूत आत्मस्वभाव को प्राप्त कर लेता है।

९-१०. उत्तम-आकिंचन्य और उत्तम ब्रह्मचर्य – आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य एक सिक्के के दो पहलू हैं।

ज्ञानानन्दस्वभावी आत्मा को ही निज मानना, जानना उसी में जम जाना, रम जाना, समा जाना, लीन हो जाना ब्रह्मचर्य है और उससे भिन्न परपदार्थों एवं उनके लक्ष्य से उत्पन्न होनेवाले चिद्विकारों को अपना नहीं मानना, नहीं जानना और उनमें लीन नहीं होना ही **आकिंचन्य** है।

यदि स्वलीनता **ब्रह्मचर्य** है तो पर में एकत्वबुद्धि और लीनता का अभाव **आकिंचन्य** है। अत: जिसे अस्ति से **ब्रह्मचर्य धर्म** कहा जाता है, उसे ही नास्ति से **आकिंचन्य धर्म** कहा गया है।

इसप्रकार स्व-अस्ति ब्रह्मचर्य है और पर की नास्ति आकिंचन्य।

जिसप्रकार क्षमा का विरोधी क्रोध, मार्दव का विरोधी मान; उसीप्रकार आकिंचन्य का विरोधी परिग्रह है अर्थात् **आकिंचन्य के अभाव को परिग्रह**

अथवा परिग्रह के अभाव को आकिंचन्यधर्म कहा जाता है।

अत: आकिंचन्य का दूसरा नाम अपरिग्रह भी हो सकता है।

आभ्यन्तर परिग्रह चौदह प्रकार के होते हैं –

१. मिथ्यात्व, २. क्रोध, ३. मान, ४. माया, ५. लोभ, ६. हास्य, ७. रति, ८. अरति, ९. शोक, १०. भय, ११. जुगुप्सा (ग्लानि), १२. स्त्रीवेद, १३. पुरुषवेद और १४. नपुंसकवेद।

बाह्य परिग्रह दश प्रकार के होते हैं –

१. क्षेत्र (खेत, प्लाट), २. वास्तु (निर्मित भवन), ३. धन (चाँदी, सोना, जवाहरात, मुद्रा), ४. धान्य (अनाज), ५. द्विपद (मनुष्य, पक्षी), ६. चतुष्पद (पशु), ७. यान (सवारी), ८. शय्यासन, ९. कुप्य, १०. भांड (बर्तन)।[१]

परद्रव्यों से रहित, शुद्ध-बुद्ध अपने आत्मा में जो चर्या अर्थात् लीनता होती है, उसे ही ब्रह्मचर्य कहते हैं। व्रतों में सर्वश्रेष्ठ इस ब्रह्मचर्य व्रत का जो पालन करते हैं, वे अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त करते हैं।

ब्रह्मचर्य अर्थात् आत्मरमणता साक्षात् धर्म है, सर्वोत्कृष्ट धर्म है।

सभी आत्माएँ ब्रह्म के शुद्धस्वरूप को जानकर, पहिचानकर; उसी में जम जाएँ, रम जाएँ और अनन्तकाल तक तद्रूप परिणमित रहकर अनन्त सुखी हों।।६।।

(क्रमश:)

१. मूलाचार, प्रथम भाग, अधिकार ५, श्लोक २११;
आचारसार, वीरनंदिकृत, अधिकार ५, श्लोक ६१

आवश्यक सूचना !

आपके यहाँ आयोजित किसी भी कार्यक्रम जिसमें **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** पधारे हों, उस कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल से संबंधित फोटोग्राफ्स (कैप्सन के साथ) एवं वीडियो, समाचार पत्रों में प्रकाशित समाचारों की कटिंग यदि आपके पास हो तो कृपया उसकी एक कॉपी रिकॉर्ड में संग्रह हेतु निम्न पते पर भेजें। यदि आपके पास इनको कॉपी करने की सुविधा न हो तो मूल कॉपी रजिस्टर्ड डाक द्वारा भिजवायें। इसकी हम कॉपी कराकर मूलकॉपी आपको रजिस्टर्ड डाक से तत्काल भिजवा देंगे। **पता :–** श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर जयपुर-302015 **E-mail - ptstjaipur@yahoo.com**

छहढाला प्रवचन

भेदविज्ञान की प्रेरणा

धन समाज गज बाज, राज ताके काज न आवै।
ज्ञान आपको रूप भये, फिर अचल रहावै।।
तास ज्ञान को कारण, स्व-पर विवेक बखानौ।
कोटि उपाय बनाय, भव्य ताको उर आनो।।७।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

अहो, मेरा तो एक मात्र ज्ञान ही है, ज्ञान वह मैं हूँ, ज्ञान के अतिरिक्त मेरा कुछ भी नहीं है। ज्ञान उसे कहा जाय कि जिसमें राग का अंश भी न हो। राग के किसी अंश को ज्ञान अपने में मिलाता नहीं, एक तरफ ज्ञान अर्थात् आत्मा, दूसरी तरफ राग और राग का फल, यह सब ज्ञान से भिन्न, आत्मा से भिन्न है – ऐसे दो भाग करके भेदज्ञान करना सम्यग्ज्ञान का उपाय है।

शुभाशुभ राग, पुण्य-पाप या उसका फल – इनमें से कोई भी आत्मरूप नहीं है; इसलिए ये आत्मा के हित में कार्यकारी नहीं हैं। इनसे पार अपना ज्ञानस्वरूप आत्मा ही अपना निजरूप है, उसमें शुभाशुभ विकल्प नहीं है।

ऐसा निजरूप ज्ञान ही आत्मा को सर्वत्र शान्तिदायक है। सम्यग्ज्ञान आत्मा की अपनी चीज है, वह भगवान आत्मा के स्वभाव में से हुआ है; इसलिए आत्मा के साथ अचल रहता है। उसके साथ सम्यक् श्रद्धा, शान्ति, सुख, वीतरागता आदि अनन्त स्वभाव हैं; परन्तु राग या पुण्य ज्ञान में समाविष्ट नहीं हैं, वे तो ज्ञान से भिन्न हैं, परभाव हैं और दूसरे क्षण में आत्मा से भिन्न पड़ जाते हैं। आत्मा के साथ वे अचल रहनेवाले नहीं हैं; क्योंकि वे आत्मा का निजरूप नहीं हैं।

अरे, चैतन्य वस्तु अन्दर अनन्तगुण सहित है, वही मेरा निजरूप है, मेरे चैतन्यरूप में शुभ विकल्प का एक अंश भी नहीं समा सकता, पुण्य भी आत्मा के

हित में काम नहीं आता– इसप्रकार हे जीव ! तू शुभाशुभ राग से भी रहित ऐसे चैतन्यमय निजरूप को पहिचान। स्व-पर के विवेक में चैतन्य तत्त्व राग से भी भिन्न जानने में आया है। अहो ! ऐसा स्व-पर का भेदज्ञान प्रशंसनीय है, सर्व सन्तों ने भेदज्ञान की प्रशंसा की है। जिस उपयोग में राग का एक अंश भी न मिले, उपयोग राग से सर्वथा भिन्न होकर अन्तर्मुख होकर उपयोग में ही तन्मयपने ठहर जाये – ऐसा भेदज्ञान अत्यंत प्रशंसनीय है। इसके बिना मात्र शुभराग से आत्मा का हित बिलकुल नहीं होता। उसमें सन्तुष्ट होने से तो तू मनुष्य भव हार जाएगा। श्रीमद् राजचन्द्र ने कहा है –

लक्ष्मी बढी अधिकार भी पर बढ गया क्या बोलिये।
परिवार और कुटुम्ब है क्या वृद्धि ? कुछ नहीं मानिये।।
संसार का बढना अरे ! नर देह की यह हार है।
नहीं एक क्षण तुझको अरे ! इसका विवेक विचार है।।

भाई ! लक्ष्मी आदि की ममता के आगे यदि तू आत्मा का हित साधना भूल जायेगा तो ऐसे मनुष्य अवतार को तू हार जायेगा इस लक्ष्मी आदि की वृद्धि में आत्मा का सुख नहीं है। अरे ! पुण्य की वृद्धि होना भी संसार ही है, इसमें भी आत्मा का सुख नहीं है। बापू ! इस अवसर में तो संसार छेदकर आत्मा के सुख मिलने का उपाय कर, सम्यग्ज्ञान द्वारा आत्मा को पहिचानने का शीघ्र उद्यम कर।

आत्मा का भेदज्ञानरूपी जो सुपुत्र है, वही आत्मा का कल्याणकर्ता है, बाहर का पुत्र आत्मा को शरणरूप नहीं होता। संयोग तो चलायमान हैं, वे चले जायेंगे, प्रात: का संयोग सायंकाल नहीं दिखता, प्रात:काल में जिसका राज्याभिषेक होता हुआ देखा हो, सायंकाल में उसी की चिता जलती दिखाई देती है। यह संयोग आत्मा की चीज नहीं है। ज्ञान ही आत्मा का निज स्वरूप होने से आत्मा के साथ अचल रहता है।

शुभ राग भी चलायमान है, वह अचल नहीं, स्थिर नहीं, शरण नहीं – आत्मा का निजरूप नहीं। राग से भिन्न आत्मा के ध्यान से परिणमित ज्ञान ही अचल है, वह आत्मा का निज रूप होने से इस लोक में और परलोक में भी ज्यों का त्यों

टिका रहेगा। वह ज्ञान सदा आत्मा के साथ अभेद रहता हुआ आत्मा को परम सुख देगा। अत: हे जीव ! तू सम्यग्ज्ञान प्रकट कर। सर्वप्रकार के उद्यम से बारम्बार भेदज्ञान के अभ्यास से अन्तर्मुख होकर तू ज्ञानस्वरूप आत्मा का अनुभव कर।

अहो ! यह भेदज्ञान निरन्तर भाने योग्य है; क्योंकि सिद्धि का कारण यह भेदज्ञान ही है। जो कोई जीव मोक्ष पाते हैं, वे भेदज्ञान से ही पाते हैं। मेरा आत्मा तो ज्ञानस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप से भिन्न जो कुछ भी शुभाशुभ राग अथवा धन-कुटुम्ब इत्यादि संयोग है, वह मैं नहीं हूँ – ऐसे भेद-ज्ञान से आत्मा का अनुभव करके सभी जीव सिद्ध हुए हैं और ऐसे भेद-ज्ञान बिना कोई जीव सिद्ध नहीं हो सकता। अत: भेदज्ञान ही मुक्ति का उपाय है।

पण्डित बनारसीदास ने लिखा है –

भेदज्ञान संवर जिन पायो, ते चेतन शिव रूप गहायो।
भेदज्ञान जिनके घट नाहीं, ते जड़ जीव बँधे जगमाँही।।

ऐसा भेदज्ञान आत्मा से अभिन्न है और मोक्ष का कारण है; इसलिए मुमुक्षुओं को भेदज्ञान की भावना सदा कर्तव्य है। आत्मा के ज्ञान बिना बाहर के जानपने को भेदज्ञान नहीं कहते, वह तो अज्ञान अथवा कुज्ञान है। अरे ! जो अपने आत्मा को पर से भिन्न न करे उसे सच्चा ज्ञान कौन कहे ? पर से भिन्न अपने आत्मा का ज्ञान, यही सच्चा भेदज्ञान है, निजस्वरूप में एकता करके रागादि से भिन्न पड़ना ही सुज्ञान है। ऐसे भेद-ज्ञानवंत सुज्ञानी जीव ही मुक्तिपुरी के पथिक हैं। जिनको ऐसा भेदज्ञान नहीं, देह में और रागमें एकत्वबुद्धि से जिनका ज्ञान अज्ञानरूप परिणमित हो रहा है, ऐसे जीव शुभ-अशुभ कर्म को बांधकर संसार में ही भटकते हैं। इसलिए कहते हैं कि हे भाई ! हे आत्महित के अभिलाषी ! करोड़ों उपायों से भी तू ऐसा भेदज्ञान कर। अपने हित का यह उत्तम कार्य सर्वप्रथम करने योग्य है। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन -

कायगुप्ति का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 68वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

बंधणछेदणमारणआकुंचण तह पसारणादीया।
कायकिरिया णियत्ती णिद्दिट्ठा कायगुत्ति त्ति।।६८।।

(हरिगीत)

मारन प्रसारन बंध छेदन और आकुंचन सभी।
कायिक क्रियाओं की निवृत्ति कायगुप्ति जिन कही।।६८।।

बंधन, छेदन, मारन (मार डालना) आकुंचन (सिकुड़ना) तथा प्रसारण (फैलना) आदि क्रियाओं की निवृत्ति को कायगुप्ति कहते हैं।

(गतांक से आगे....)

पद्मासन, खड्गासनादि शारीरिक अवस्थाओं का कर्त्ता आत्मा नहीं है। शरीर की अवस्था उस समय वैसी होना वह आत्माधीन नहीं है। पद्मासनादिरूप जड़ की अवस्था जड़ से होती है, यदि उसे जीव करे तो जड़ ने क्या किया? आत्मा आत्मा की अवस्था करता है। आत्मा का स्वभावसन्मुख होने पर शरीर की ओर का राग घटता है और तब शरीर की पद्मासनादि क्रिया शरीर के कारण होती है।

यहाँ कायगुप्ति का स्वरूप का कहा है। पुरुष के बंधनादि का अन्तरंग निमित्त कर्म है। किसी को साँकल से बाँधे, उसके बँधने में अन्तरंग निमित्त उसका असातावेदनीय कर्म है और बाह्य निमित्त किसी मनुष्य का कायव्यापार है। पर को बंधन होने का कारण क्या है वह आचार्यदेव यहाँ बतलाते हैं। बंधन में उसका कर्मोदय अन्तरंग निमित्त है।

अनेक स्थानों पर कर्म को अन्तरंग निमित्त कहा गया है, परन्तु इस नियमसार की ५३वीं गाथा में सम्यग्दर्शन प्राप्त करनेवाले जीव को सम्यग्दृष्टि-ज्ञानी अन्तरंग हेतु अन्तरंग निमित्त कहा है। कारण कि वहाँ (५३वीं गाथा में) धर्म की बात है और यहाँ कर्म की बात है। ५३वीं गाथा शुद्धभाव अधिकार में है, वहाँ जिसको शुद्धभाव

अर्थात् सम्यग्दर्शन प्रकट हो, उसमें उपचार से अन्तरंग निमित्त सामने शुद्धभाववाले को अर्थात् शुद्धभावपरिणत ज्ञानी को कहा है।

नियमसार की इस गाथा (५३) में आचार्यदेव ने तथा टीकाकार मुनिराज ने स्पष्ट कर दिया है कि सम्यग्दर्शन प्राप्त करनेवाले जीव को प्रथम एकबार तो ज्ञानी का ही निमित्तपना होता है; मिथ्यादृष्टि का उपदेश अथवा केवल अपने द्वारा शास्त्र-वाँचन-सम्यग्दर्शन का निमित्त नहीं बनता। ग्रन्थों में साधारणतया प्रचलित है कि कर्म अन्तरंग निमित्त है।

बन्धन का अन्तरंग कारण उसका असातावेदनीय कर्म है। वह बंधन का भाव छोड़ देना और स्वभाव में एकाग्र होना वह कायगुप्ति है। बंधन में बाह्य निमित्त किसी पुरुष का कायव्यापार है। बंधन तो शरीर की – पुद्गल की अवस्था उस काल में उसप्रकार की होने को थी, इसलिए वह अपने कारण - शरीर के कारण हुई है, परन्तु उसका अन्तरंग और बाह्य निमित्त कौन है यह बतलाते हैं।

शरीर अपने पर्याय के काल में बंधा है, परन्तु यहाँ तो निमित्तों का ज्ञान कराया है। शरीर बंधने पर जीव ऐसा भान करेगा कि यह मुझे बाँध रहा है; वह द्वेषभाव अपने अपराध से करता है, उसमें कर्म आदि कोई अन्य कारण नहीं हैं। स्वयं रागभाव या द्वेषभाव करे तो वह जीव का अपना ही अपराध है। स्वयं अपराध किया, तब मोहनीयकर्म निमित्त कहा जाता है। मोह-राग-द्वेषभाव अपने अपराध से होता है, कर्म से नहीं – कर्म अपराध कराता नहीं।

यहाँ कायगुप्ति की बात चलती है। काय की क्रिया के ओर का लक्ष छोड़ना और स्वभाव में एकाग्र होना वह कायगुप्ति है।

छेदन का भी अन्तरंग कारण कर्मोदय है। बहिरंग कारण प्रमत्तजीव की कायक्रिया है। गजकुमार मुनि के मस्तक पर अँगीठी जलाई सो वह तो अपने कारण रखी गई है। हाँ, वहाँ अन्तरंग निमित्त-कारण गजकुमार का असाता वेदनीयकर्म और बाह्य निमित्त शामिल हैं।

सुकौशल मुनि के शरीर को व्याघ्री फाड़कर खा रही है, वहाँ व्याघ्री का मुख तो बाह्य निमित्त है और अन्तरंग निमित्त असातावेदनीयकर्म का उदय है। व्याघ्री के निमित्त से फाड़ खानेरूप शरीर की क्रिया तो होनी ही थी, उसका लक्ष छोड़कर चिदानन्द आत्मस्वरूप में लीन होना – शरीर की ओर का विकल्प तोड़कर स्वरूप में एकाग्र होना – सच्ची कायगुप्ति है।

अन्य अनेक स्थानों पर कर्म को अन्तरंग कारण कहा है, किन्तु ५३वीं गाथा में सम्यक्त्वपरिणाम में दूसरे सम्यग्ज्ञानी जीव को उपचार से अन्तरंग हेतु कहा है; कारण कि यह नियमसार शास्त्र है, इसमें नियम अर्थात् निश्चयमोक्षमार्ग का अंग जो निश्चय-सम्यग्दर्शनरूप शुद्धपर्याय, उसमें अन्तरंग निमित्त कौन होता है – वह बताया है। विकल्परहित निर्मल वीतरागीपर्याय में उपचार से अभ्यन्तर निमित्त दर्शनमोह के क्षय-क्षयोपशम आदि युक्त सम्यग्ज्ञानी जीव को कहा है। सम्यग्ज्ञानी जीव में ही इस रीति से निमित्त होने की योग्यता है, दूसरों में – मिथ्यादृष्टियों में निमित्तत्व की योग्यता नहीं।

छेदन का बहिरंग कारण प्रमादी जीव की कायक्रिया कही है, अप्रमादी जीव की कायक्रिया नहीं; कारण कि ज्ञानानन्दस्वभाव में झूलते मुनि को प्रमादभाव नहीं है। मुनि ध्यान में बैठे हों, ऊपर से वृक्ष का फल उनके शरीर पर गिरे और उस फल में रहता हुआ जीव मर जाय तो भी मुनि छेदन में निमित्त नहीं कहे जा सकते, क्योंकि उनके प्रमादभाव नहीं है। जिसके प्रमादभाव है, उसी की कायक्रिया को छेदन में निमित्त कहा जाता है।

मरण का भी अन्तरंग हेतु आन्तरिक (निकट) सम्बन्ध का (आयुष्य का) क्षय है, बहिरंग कारण किसी की कायविकृति है। कीड़ा, मकोड़ा आदि त्रसजीव का अथवा वनस्पति आदि स्थावरजीव का मरण होता है वह उसकी आयुष्य पूरी होने के कारण होता है, अन्य किसी में उसे मार डालने की शक्ति नहीं है।

यहाँ आन्तरिक सम्बन्ध का अर्थ वर्तमान जो आयुष्य उदय में है वह समझना, भविष्य का बांधा हुआ आयुष्य नहीं समझना। वर्तमान गति का आयुष्य उदयरूप होने से उसके साथ निकट सम्बन्ध कहा, भविष्य का आयुष्य तो सत्ता में पड़ा है – उसकी यहाँ बात नहीं है। वर्तमान उदयरूप आयुष्य का क्षय तो मरण का अन्तरंग निमित्त है और बहिरंग निमित्त किसी की कायविकृति है।

मुनि अप्रमत्तसंयम में झूलते होते हैं। उन्हें स्वभाव के आश्रय से राग घटकर विशेष वीतरागभाव प्रगट हुआ है; इसलिए मुनि किसी के मरण में निमित्त नहीं हैं। एकेन्द्रिय हरितकाय आदि का मरण हो उसमें उस जीव के आयुष्य का क्षय अन्तरंग कारण है, काटनेवाले जीव की कायविकृति बाह्य निमित्त है।

कोई जीव किसी को मार नहीं सकता, किन्तु सामनेवाले जीव के आयुष्य के पूर्ण होने का काल हो उस समय उसप्रकार की कायविकृतिवाले पर निमित्तपने का आरोप आता है; इतना निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध का

(शेष पृष्ठ 19 पर ...)

।। हार्दिक आमंत्रण ।।

श्री रत्नत्रय विधान

शुक्रवार, दि. २२ अप्रैल २०१६

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड,
डबोक, उदयपुर- २४

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

श्री सीमंधर जिनालय
वेदी
शिलान्यास महोत्सव

शनिवार, दि. २३ अप्रैल २०१६

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड,
डबोक, उदयपुर- २४

श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत् पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा संचालित

संस्कार तीर्थ

शाश्वत धाम

अतिथि निवास कन्या छात्रावास
भवन
उद्घाटन समारोह

रविवार, दि. २४ अप्रैल २०१६

एवरेस्ट आशियाना, एअरपोर्ट रोड,
डबोक, उदयपुर- २४

(पृष्ठ 14 का शेष ...)

ऐसा अर्थ नहीं है कि एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में कुछ कर दे। प्रत्येक पदार्थ अपने में प्रत्येक समय परिणमनस्वभाव वाला निमित्त-पदार्थ नैमित्तिक में कुछ करता नहीं और नैमित्तिक-पदार्थ निमित्त में से कुछ लेता नहीं। निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध प्रत्येक पदार्थ की पृथकता बतलाता है।

आंकुचन, प्रसारण आदि का हेतु संकोच-विस्तारादिक के हेतुभूत समुद्घात है। समुद्घात का अन्तरंग कारण समुद्घात का निमित्त ऐसा उसप्रकार का कर्म है, यह कायक्रियाओं की निवृत्ति ही कायगुप्ति है। वास्तव में तो कायक्रिया की निवृत्ति आत्मा कर ही नहीं सकता, परन्तु जब उसतरफ का लक्ष छोड़कर स्वभाव में लीनता की जाय – तब कायक्रिया की निवृत्ति की – ऐसा कहा जाता है।

(अनुष्टुभ्)

मुक्त्वा कायविकारं यः शुद्धात्मानं मुहुर्मुहः।
संभावयति तस्यैव सफलं जन्म संसृतौ ।।९३।।

(दोहा)

जो ध्यावे शुद्धात्मा तज कर काय विकार।
जन्म सफल है उसी का शेष सभी संसार ।।९३।।

कायविकार को छोड़कर जो पुनः पुनः शुद्धात्मा की संभावना (सम्यक् भावना) करता है, उसी का जन्म संसार में सफल है; अन्यथा अर्थोपार्जन करे, सम्मान प्राप्त करे अथवा पुण्यसंचय करे, तथापि जन्म सफल नहीं होता। आत्मा शुद्धचैतन्य ज्ञातादृष्टास्वरूप पदार्थ है, वह पर की, जड़ की क्रियारहित है, तथा शुभ-अशुभ विकारी भावों से रहित है; वे भाव आत्मा का स्वरूप नहीं हैं – इसप्रकार सम्यक्भावना करना। वह भावना कैसे हो? आत्मस्वभाव की सच्ची रुचि करने से वह भावना होती है। 'रुचि अनुयायी वीर्य', स्वभाव की रुचि करे तो स्वभाव की सच्ची भावना प्रगट हो। यहाँ भावना का अर्थ विकल्प नहीं है, किन्तु शुद्धचैतन्यस्वभाव में एकाग्रता करना है, अन्य में नहीं। •

सूचना

पूज्य बाबूजी 'युगलजी' कोटा की स्मृति में कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन की ओर से 'युगल चेतना' विशेषांक प्रकाशित किया गया है। यह विशेषांक प्राप्त करने हेत इस मोबाइल नम्बर पर अपना पता एस.एम.एस. करें-7698383799 इस विशेषांक को ई-मेल पर मंगाने हेतु इस ई-मेल आई.डी. पर मेल करें - **gyata@jhanjhari.com**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : आगम का निश्चय-व्यवहार क्या है और अध्यात्म का निश्चय-व्यवहार क्या है ?

उत्तर : अध्यात्म में शुद्धद्रव्य को निश्चय कहते हैं और शुद्धपरिणति को व्यवहार कहते है; जबकि आगम में शुद्धपरिणति को निश्चय कहते है और उसके साथ वर्तते हुए शुभपरिणाम को व्यवहार कहते हैं।

प्रश्न : निश्चय है वह मुख्य है या मुख्य है वह निश्चय है ?

उत्तर : मुख्य है, वही निश्चय है। यदि निश्चय को मुख्य कहा जावे तो पर्याय भी निश्चय है, अत: वह भी मुख्य हो जावेगी; किन्तु ऐसा नहीं है। मुख्य है, वही निश्चय है और गौण है, वह व्यवहार है। कार्तिकेयानुप्रेक्षा में इसका विशद् स्पष्टीकरण किया है। श्रद्धा में त्रिकाली स्ववस्तु एक ही मुख्य है।

प्रश्न : पंचपरावर्तन में जीव भटकता है, वह व्यवहार से है अथवा निश्चय से?

उत्तर : पंचपरावर्तन में अपने भावों से ही भटकता है, अत: निश्चय से है; परन्तु त्रिकाली ध्रुव स्वभाव की अपेक्षा से पंचपरावर्तन के भाव पर्याय में होने से पर्याय को व्यवहार कहा जाता है। पंचपरावर्तन में जीव भटकता है, वह व्यवहार से भटकता है – ऐसा नहीं है; किन्तु निश्चय से ही भटकता है। प्रवचनसार में जीव के विकारभाव को निश्चय कहा है।

प्रश्न : त्रिकाली निष्क्रिय चैतन्य ही परमार्थ जीव है। बंध और मोक्ष की पर्याय को करे वह तो व्यवहार जीव है। तो बताइये कि कितने प्रकार के जीव हैं ?

उत्तर : दो प्रकार के जीव हैं। एक परमार्थ जीव और दूसरा व्यवहार जीव। परमार्थ जीव तो त्रिकाल निष्क्रिय मोक्षस्वरूप ही है और पर्याय बंध-मोक्षरूप से परिणमन करती है वह व्यवहार जीव है।

प्रश्न : जिस घर में जाना न हो उसके जानने का क्या काम ? उसीप्रकार व्यवहार तो छोड़ने योग्य है, तब फिर उसके जानने का क्या काम है ?

उत्तर : जिस घर में न जाना हो, उसे भी जानना चाहिये। यह घर अपना नहीं है, अपितु दूसरे का है – इसप्रकार जानना आवश्यक है। उसीप्रकार पर्याय का आश्रय करने का जहाँ निषेध किया है, वहाँ उसका ज्ञान भी न करे तो एकान्त हो जायेगा, प्रमाणज्ञान नहीं होगा। पर्याय का आश्रय छोड़ने योग्य होने पर भी, जैसी वह है; वैसा ज्ञान तो करना ही पड़ेगा और तभी निश्चयनय का ज्ञान सच्चा होगा।

प्रश्न : जो व्यवहार, निश्चय को बतलाता है, उसका कुछ उपकार तो है न ?

उत्तर : नहीं ! व्यवहार निश्चय तक नहीं पहुँचाता, उससे कुछ कार्य सिद्धि नहीं होती। व्यवहार अनुसरण करने योग्य नहीं है। दर्शन, ज्ञान, चारित्र का भेद करके आत्मा समझना पड़ता है। इतना व्यवहार होता ही है, तब भी वह अनुसरण करने योग्य नहीं है। एक ज्ञायक को ही लक्ष्य में लेना योग्य है।

प्रश्न : व्यवहार प्रतिक्रमणादि कब सफल कहे जावें ?

उत्तर : हमारे वीतरागी सन्तों ने शास्त्रों में द्रव्यश्रुतात्मक व्यवहार प्रतिक्रमण कहे हैं – उन्हें सुनकर, जानकर, सकल संयम की भावना करे, उसे व्यवहार प्रतिक्रमण का जानना सफल है—सार्थक है। प्रतिक्रमणादि जितने प्रकार के व्यवहार शास्त्र में कहे हैं, वे सब व्यवहार बन्ध के कारण हैं; उन्हें छोड़कर अन्दर आनन्दस्वरूप में जाने पर ही व्यवहार का सफलपना कहा गया है। जितना भी क्रियाकाण्ड व्यवहार कहने में आता है, उसे छोड़कर शुद्धस्वरूप के अनुभव में निमग्न हो, तभी व्यवहार के जानपने की सफलता कही गई है। जो शुद्धस्वरूप के सन्मुख तो होता नहीं और मात्र व्यवहार में लीन रहकर आत्मा के आनन्दस्वरूप में नहीं जाता तो उसका व्यवहार केवल संसारभ्रमण का ही कारण है।

महावीर संदेश संस्कार शिक्षण शिविर संपन्न

हीरापुर (म.प्र.) : यहाँ बच्चों एवं युवाओं को धार्मिक संस्कार देने हेतु दिनांक 8 से 15 नवम्बर तक आवासीय शिविर का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर दोपहर में भगवान शांतिनाथ व पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन तथा सायंकाल अनेक स्नातक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

इस शिविर में हीरापुर, तिगौड़ा, मड़देवरा, अमरमऊ आदि स्थानों के लगभग 280-300 बच्चों ने लाभ लिया।

विधान एवं विद्वत् गोष्ठी का विशेष आयोजन

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ अष्टाह्निका महपर्व के अवसर पर दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक मुमुक्षु ऑफ नॉर्थ अमेरिका **(MONA)** द्वारा श्री नवीनभाई–सुशीलाबेन तेजानी यू.एस.ए. के सहयोग से चारों अनुयोगों के वीतरागता की सिद्धि विषय पर शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर **पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली** द्वारा चरणानुयोग के माध्यम से वीतरागता की पुष्टि, **पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया** द्वारा प्रथमानुयोग की अनेक कहानियों के माध्यम से पुण्य पाप के फल को प्रदर्शित करते हुये उससे वीतरागता की सिद्धि, **पण्डित चेतनभाई राजकोट** द्वारा समयसार की 320वीं गाथा के आधार से द्रव्यानुयोग के विषय को स्पष्ट किया गया तथा **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** द्वारा करणानुयोग के अन्तर्गत गुणस्थान, पंचपरावर्तन एवं ज्ञानावरणादि आठ कर्मों के माध्यम से वीतरागतारूप प्रयोजन की सिद्धि को बहुत मार्मिक ढंग से स्पष्ट किया गया। इस प्रसंग पर प्रतिदिन **ब्र. हेमचंदजी 'हेम'** के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

प्रतिदिन सायंकाल ज्ञानगोष्ठी के माध्यम से शंका समाधान का विशेष आयोजन समागत विद्वानों के सहयोग से किया जाता था। श्री किरीटभाई गोसलिया द्वारा कक्षा का भी लाभ मिला।

अष्टाह्निका के प्रसंग पर प्रात:काल पंचमेरु नंदीश्वर विधान का आयोजन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित दीपकजी धवल भोपाल एवं श्री अमृतभाई के सहयोग से किया गया।

कार्यक्रमों में लगभग 400 साधर्मियों के साथ–साथ विदेशों से पधारे लगभग 35–40 साधर्मियों ने तथा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विदेशों में बैठे हुये लोगों ने प्रत्यक्षवत् लाभ लिया। अन्त में देवलाली ट्रस्ट की ओर से श्री कांतिभाई मोटानी ने मोना का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रमुख सहयोगी व संचालक श्री किरीटभाई गोसलिया रहे। संयोजन श्री रजनीभाई गोसलिया ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अमेरिका में रहकर किया।

मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की **द्वितीय सेमेस्टर परीक्षा दिसम्बर–2015 के अंतिम सप्ताह में आयोजित होने जा रही है।** संबंधित सभी परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र रजिस्टर्ड डाक से भेजे जा चुके है। कदाचित 30 दिसम्बर 2015 तक भी प्रश्नपत्र नहीं पहुंचे तो फोन द्वारा सूचना भेजकर प्रश्नपत्र मंगा लेवें। **– प्रबंधक**

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) दिल्ली : यहाँ विश्वासनगर में अष्टाह्निका महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान परमागम मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक 170 तीर्थंकर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दिन मंदिर की वर्षगांठ के अवसर पर जिनेन्द्र रथयात्रा का आयोजन हुआ, जिसमें सैंकड़ों साधर्मियों ने भाग लिया। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली द्वारा संपन्न हुये।

(2) मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर विभिन्न उपनगरों में तत्त्वप्रचार हुआ, जिसके अन्तर्गत सीमंधर जिनालय में पण्डित जयकुमारजी जैन कोटा, मलाड (ईस्ट) में पण्डित अश्विनभाई शाह, भायंदर में पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, दादर में पण्डित मनीषजी जैन इन्दौर, मलाड (वेस्ट) में पण्डित विपिनजी जैन, बोरीवली में पण्डित जिनेश आर.शेठ एवं दहिसर में पण्डित अनिलजी शाह द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) सेलू (महा.) : यहाँ कार्तिक माह की अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 18 से 25 नवम्बर तक नंदीश्वर द्वीप विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित मनोजजी जबलपुर द्वारा प्रात: पुरुषार्थसिद्ध्युपाय पर, दोपहर में समयसार पर एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित मनोजजी जैन द्वारा संपन्न हुये।

छत्तीसगढ में महती धर्मप्रभावना

रायपुर (छत्तीसगढ) : यहाँ शंकर नगर स्थित श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 3 से 10 नवम्बर तक पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके पश्चात् श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मंदिर में दिनांक 25 से 30 नवम्बर तक ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 'चार अभाव' विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके साथ ही ब्र. रवि भैया ललितपुर द्वारा सी.डी. के माध्यम से बच्चों की कक्षा ली गई। कार्यक्रम में लगभग 200 दिगम्बर साधर्मियों के साथ–साथ अनेक श्वेताम्बर भाईयों ने भी लाभ लिया।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 व 31 जनवरी 2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास
11 से 17 फरवरी 2016	गुना (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
22 से 24 फरवरी 2016	उदयपुर–त्रिकालवर्ती जिनालय	वेदी प्रतिष्ठा
26 से 28 फरवरी 2016	जयपुर	वार्षिकोत्सव
22 से 24 अप्रैल 2016	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन

प्रशिक्षण शिविर कार्यालय का उद्घाटन

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ 50वें स्वर्णजयन्ती शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर के कार्यालय का उद्घाटन दिनांक 15 दिसम्बर को प्रात: 9.45 बजे किया गया।

सर्वप्रथम शीतलनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर से धर्मध्वजा लेकर शोभायात्रा प्रारम्भ हुई।

इस अवसर पर ब्र.सुमतप्रकाशजी, पण्डित शिखरचंदजी, पण्डित लालजीराम जैन, नन्दकिशोरजी जैन, ब्र.अमित भैया, ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मलूकचंदजी जैन, मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री सुभाषजी सर्राफ, पण्डित विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय', पण्डित मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय', श्री गंभीरमलजी जैन, श्री रविप्रकाशजी जैन, डॉ. आर.के. जैन आदि महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम में चिन्मय जैन बड़कुल (अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन विदिशा) ने सभी साधर्मियों से शिविर में बढचढकर भाग लेने की अपील की। इस अवसर पर शांतिनाथ महिला मंडल विदिशा, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन विदिशा, अ.भा.जैन युवा फैडरेशन महिला शाखा विदिशा एवं मुमुक्षु मण्डल विदिशा के सैंकड़ों साधर्मीजन उपस्थित थे।

आगामी कार्यक्रम...

(1) शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में फाल्गुन माह की अष्टाह्निका में 16 मार्च से 23 मार्च तक पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ मिलेगा। सभी साधर्मियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में प्रवचनों का लाभ लेवें।

आवास की व्यवस्था हेतु 07250536682 पर पूर्व सूचना देवें।

(2) सिद्धायतन द्रोणगिरि में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की वर्षगांठ के अवसर पर दिनांक 3 से 10 फरवरी तक ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' के सानिध्य में समयसार शिक्षण शिविर एवं समयसार विधान का आयोजन किया जा रहा है। शिविर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा।

आवास हेतु अपनी सूचना भेजने की अन्तिम तिथि 20 जनवरी है। **संपर्क सूत्र :-** मोबाइल नं. 9753456868 (पंकज जैन), 8349981560 (शुभम शास्त्री)।

पंचम महिला शिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ महिला शिविरों की शृंखला में पंचम आध्यात्मिक महिला शिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 24 से 27 नवम्बर तक हुआ।

इस अवसर पर विदुषी राजकुमारीबेन दिल्ली, विदुषी जिनलबेन मुम्बई, विदुषी सरोजबेन अहमदाबाद, विदुषी सविताबेन अहमदाबाद द्वारा समाधिमरण, छहढाला, नियमसार, द्रव्य-गुण-पर्याय आदि विषयों पर लाभ मिला।

शिविर में अहमदाबाद, मुम्बई एवं राजस्थान से लगभग 300 महिलाओं ने लाभ लिया।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 11 अक्टूबर को 'सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजीवजी शास्त्री खड़ैरी ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अरिहंत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं रमन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण संदीप जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के विनीत जैन एवं देवेन्द्र जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 23 नवम्बर को 'हमारा अपना जैन भूगोल : भाग-1' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ.दीपकजी जैन वैद्य ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अमन जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं ऋषभ जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण रविन्द्र जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के गौरव उखलकर एवं विनय जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 25 नवम्बर को 'छहढाला तथा मोक्षमार्ग प्रकाशक का तुलनात्मक विवेचन' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में मंथन गाला (शास्त्री प्रथम वर्ष), सिद्धार्थ सिंघई (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं ऋषभ-राजीव जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण हरीश जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के शुभम जैन वात्सल्य एवं अरविन्द जैन ललितपुर ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

(4) दिनांक 5 दिसम्बर को 'एक दृष्टि पुराण की ओर : भाग 1' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित संजयजी सेठी ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में अभय जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), अभिषेक उपाध्ये (शास्त्री द्वितीय वर्ष) एवं अनुभव गौरझामर (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण चिराग जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के सतेन्द्र जैन एवं ऋषभ-राजीव जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित गोमटेशजी शास्त्री ने किया।

(5) दिनांक 6 दिसम्बर को 'एक दृष्टि पुराण की ओर : भाग 2' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में सर्वेश जैन (शास्त्री प्रथम वर्ष), शुभम जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष), ऋषभ जैन सम्यक् (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं अभिषेक जैन (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण प्रजल जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अविनाश जैन एवं गौरव भिण्ड ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित उदयजी शास्त्री ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के अच्युतकांत जैन व सौरभ जैन फूप ने किया।

आध्यात्मिक संगोष्ठी संपन्न

मौ (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 14 से 16 नवम्बर तक त्रिदिवसीय आध्यात्मिक संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्' द्वारा दोनों समय नियमसार की गाथा 43 पर एवं पण्डित सुरेशचंदजी द्वारा नियमसार, द्रव्य-गुण-पर्याय व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त तीन गोष्ठियों का भी आयोजन हुआ, जिनमें प्रथम व द्वितीय गोष्ठी दीपावली विषय पर एवं तृतीय गोष्ठी सम्यग्दर्शन विषय पर हुई। इन गोष्ठियों में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान अध्ययनरत छात्रों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर ब्र. रवीन्द्रजी का उद्बोधन भी हुआ।

श्री शिखरचंद ग्रंथभेंट योजना

श्री शिखरचंदजी जैन की स्मृति में सभी मंदिरों, स्वाध्याय मंडलों, ब्रह्मचारियों व मुमुक्षुओं के लिये जो भी दिगम्बर जैन साहित्य आवश्यक हो वह निःशुल्क भेंट दिया जायेगा। ब्रह्मचारियों एवं मंदिरों हेतु यह योजना आजीवन उपलब्ध रहेगी। ग्रन्थप्राप्ति हेतु पोस्टकार्ड या मोबाइल से सूचना देवें। **संपर्क –** डॉ. दीपक जैन 'वैद्यरत्न', सी-115, सावित्री पथ, बापूनगर, जयपुर-302015 मोबाइल- 09352990108

बाल शिक्षण शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ कहान शिशु विहार में दिनांक 26 से 29 नवम्बर तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित सोनूजी शास्त्री सोनगढ एवं पण्डित सजलजी शास्त्री छिन्दवाड़ा की कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। शिविर के निर्देशक पण्डित विरागजी शास्त्री थे।

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) निवासी श्री नथमलजी झांझरी की सुपौत्री एवंश्री सर्वेश कुमार जैन की सुपुत्री **सौ.कां. श्रीया जैन** का शुभ विवाह दिनांक 16 नवम्बर 2015 को **चि.निश्चल जैन** सुपुत्र श्री नरेन्द्रकुमार बाकलीवाल उदयपुर के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये। हार्दिक बधाई !

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री शिखरचंदजी राजधरलालजी जैन का दिनांक 13 नवम्बर को 72 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप टोडरमल स्मारक की दैनिक स्वाध्याय सभा के श्रोता थे एवं स्मारक की सभी गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' के पिताजी थे। आपकी प्रेरणा से ही डॉ. दीपकजी टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययन हेतु आये थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) गुढाचन्द्रजी (राज.) निवासी श्री रामकिशनजी जैन का दिनांक 27 नवम्बर को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। आपने अपने तीन पुत्रों डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी मुम्बई तथा पौत्र चिन्मय शास्त्री को शास्त्री विद्वान बनाया एवं दो पौत्र दुर्लभ व चेतनप्रकाश टोडरमल महाविद्यालय में अध्ययनरत हैं। पुत्रियों व पौत्रियों को भी आध्यात्मिक संस्कार प्रदान किये एवं उनका विवाह भी तत्त्वज्ञान से समृद्ध परिवारों में ही किया।

ज्ञातव्य है कि आपका जन्म अजैन परिवार में हुआ था तथा 17 वर्ष की आयु में आपको वीतरागी संस्कार प्राप्त हुये। जिसके बाद आपका पूरा जीवन परिवर्तित हो गया। आपके प्रयत्नों से आज आपके गांव में 70 से भी अधिक मुमुक्षु भाई-बहिन सतत् तत्त्वाभ्यास करते हैं। टोडरमल स्मारक द्वारा संचालित कार्यक्रमों का आप भरपूर लाभ लेते थे। आपकी स्मृति में टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को ज्ञानदान स्वरूप 11 हजार रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

पाठशाला सम्मेलन संपन्न

दहिगांव (महा.) : यहाँ मध्यवर्ती वीतराग स्वाध्याय मंडल द्वारा दिनांक 15 नवम्बर को पाठशाला सम्मेलन संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पंढरपुर, अकलूज, मालशिरस, नातेपुते, फलटन, लासुर्णे, म्हसवड, पुणे, मोडलिब आदि स्थानों के बच्चे सम्मिलित हुये, जिसमें पूजन, सामूहिक कक्षा एवं प्रतियोगितायें हुईं। सभी कार्यक्रमों का पर्यवेक्षण एस.एस. पाटील द्वारा किया गया।

सभी कार्यक्रमों का संचालन पण्डित राहुलजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी शास्त्री, पण्डित प्रियमजी शास्त्री द्वारा एवं संयोजन श्री उमेशजी गांधी द्वारा किया गया।

डॉ. धनकुमारजी का वर्ल्ड रिकॉर्ड

सूरत (गुज.) निवासी डॉ. धनकुमारजी जैन का नाम सबसे अधिक उम्र (80 वर्ष 8 माह) में Ph.D. की उपाधि प्राप्त करने वाले दुनिया के सर्वप्रथम व्यक्ति के रूप में **'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड'** में दर्ज हुआ है।

आप विलक्षण प्रतिभा के धनी हैं, आपने सर्वार्थसिद्धि वचनिका आदि लगभग 20 ग्रंथों का ढूंढारी से हिन्दी अनुवाद किया है। **'टोडरमलकृत अर्थसंदृष्टि अधिकार में निहित कर्म प्रकति मोह का गणितीय विश्लेषण'** विषय पर आठ वर्षों में अपना शोध पूर्ण किया, जिसमें आपने गोम्मटसार की लुप्तप्राय अलौकिक गणित को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

आपने अपनी पीएच.डी. द ओपन इन्टरनेशनल युनिवर्सिटी फॉर कॉम्प्लिमेन्टरी मेडिसिन, यू.एस.एस.आर. की कोलम्बो (श्रीलंका) स्थित अतिरिक्त शाखा सम्बद्ध जोराष्ट्रियन कॉलेज मुम्बई के माध्यम से प्रस्तुत की। आपका संपूर्ण कार्य **प्रो.डॉ. अनुपम जैन इन्दौर** (प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष-गणित : देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर) के निर्देशन में पूर्ण हुआ, सहनिर्देशक डॉ. मन्मथजी पाटनी थे। आप टोडरमल स्मारक के अनन्य सहयोगी हैं। इस उपलक्ष्य में आपकी ओर से 2200/- रुपये की राशि संस्था को प्राप्त हुई।

जिनवाणी रत्न उपाधि भी – ज्ञातव्य है कि आपको गोम्मटसार की लुप्तप्राय अलौकिक गणित पर शोधलेख लिखकर पीएच.डी. की डिग्री लेने के उपलक्ष्य में श्री खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज, सूरत द्वारा दिनांक 29 नवम्बर को **'जिनवाणी रत्न'** की उपाधि से विभूषित किया गया। आपको वीतराग-विज्ञान परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

वेदी प्रतिष्ठा एवं वार्षिकोत्सव संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ समीप ही स्थित झींझवा एवं साणोदा गांव से जिनेन्द्र भगवान का उत्थापन एवं चैतन्यधाम की नूतन वेदी पर विराजमान करने हेतु दिनांक 29 व 30 नवम्बर को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव एवं चैतन्यधाम का सप्तम वार्षिकोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन, विद्वानों के प्रवचन, इन्द्रसभा, यागमंडल विधान, शांति विधान आदि कार्यक्रम हुये। कार्यक्रम में पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित नीलेशभाई मुम्बई, पण्डित दीपकभाई कोटडिया अहमदाबाद, पण्डित उदयमणिजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित ध्रुवेशजी शास्त्री अहमदाबाद तथा स्थानीय विद्वान पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित सुमितजी शास्त्री, पण्डित समकितजी शास्त्री का सानिध्य प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित सचिनजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन श्री अमृतलाल चुन्नीलाल मेहता, श्री राजूभाई वाडीलाल शाह, श्री प्रतीकभाई चन्द्रकांत शाह द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के निर्देशन में पूर्ण हुये।

(आगामी कार्यक्रम...)

चतुर्थ वार्षिक महोत्सव

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा फरवरी 2012 में ऐतिहासिक एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया था; उस महामहोत्सव की यादें सभी को पुन: ताजा हो जावें, इस हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का **चतुर्थ वार्षिक महोत्सव दिनांक 26 से 28 फरवरी 2016 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित आयोजित होने जा रहा है।**

इस मंगल महोत्सव में पधारने हेतु आप सभी को

हार्दिक आमंत्रण है।

अरिहंत चैनल पर : स्वामीजी के प्रवचन

अरिहंत चैनल पर प्रथम बार 1 जनवरी 2016 से आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों का प्रसारण किया जा रहा है।

अरिहंत चैनल पर यह प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7.00 से 7.20 तक प्रसारित किया जायेगा। अवश्य देखें।

अरिहंत चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.194 एवं वीडियोकॉन के 487 पर भी उपलब्ध है।

ध्यान दें - समय बदल गया : अब 6.30 पर

जिनवाणी चैनल पर प्रसारित होने वाले डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों के प्रसारण का समय अब 1 जनवरी 2016 से 6.30 से 7.00 तक हो गया है।

अत: समय का विशेष ध्यान रखते हुये प्रात: 6.30 से प्रवचनों का लाभ लें। इसके तत्काल बाद 7.00 बजे से 7.20 तक अरिहंत चैनल पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

ज्ञातव्य है कि जिनवाणी चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर भी उपलब्ध है।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा - कार्यक्रम -2016

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
रविवार 24 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 25 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष) 10. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष)
मंगलवार 26 जनवरी 2016	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्ड श्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्धयुपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय प्रात: 9 से शाम 5 बजे के बीच कभी भी सैट कर सकते हैं।
(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।
(3) किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।
(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक में लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड

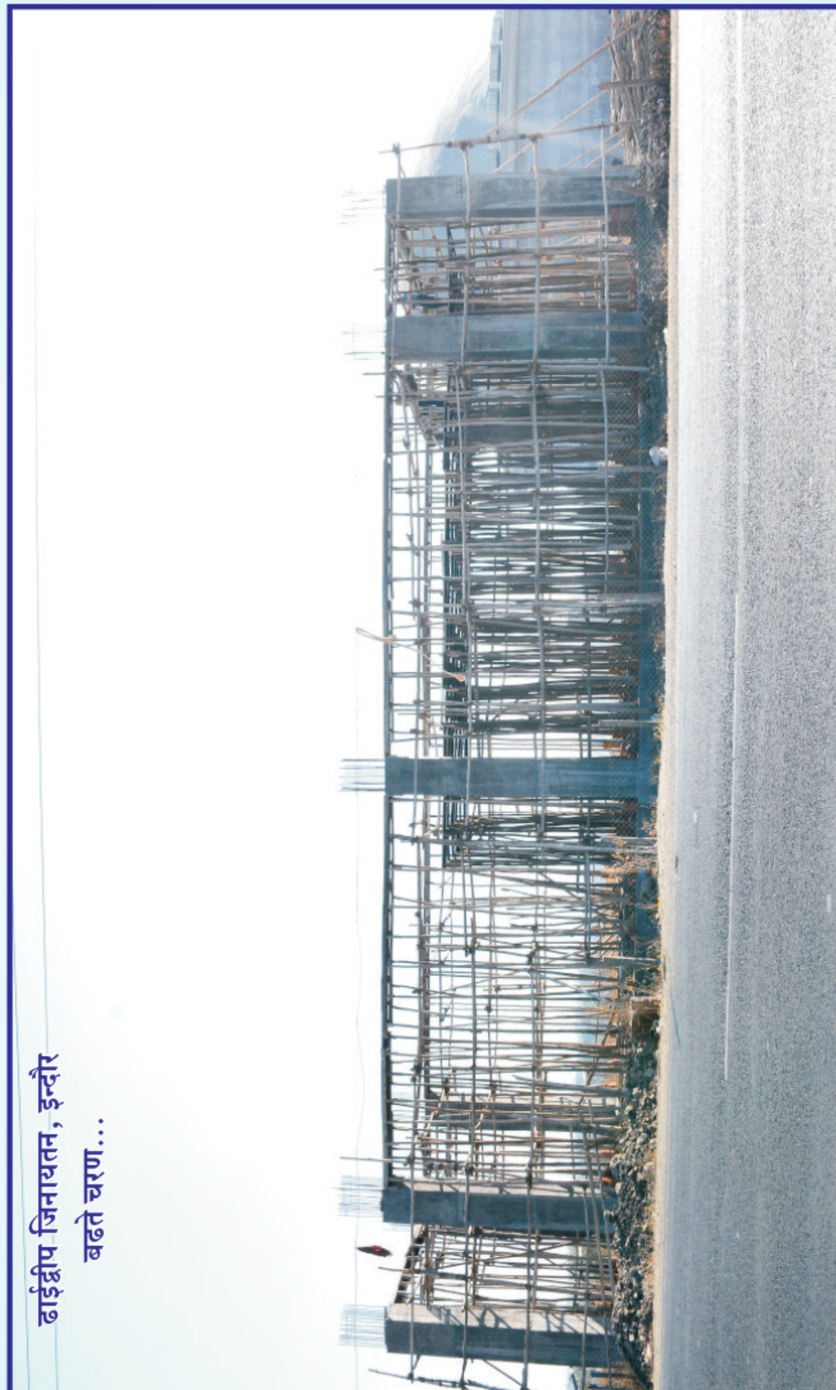

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में 108 फीट चौड़े व 108 फीट ऊँचे द्वितीय सिंहद्वार के निर्माण का दृश्य (सहयोगदाता - रसिकलाल माणिकचंद धारीवाल, पूना)

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में बन रहे मेरु पर्वत का दृश्य

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय , नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**